आप किसके लिए मरेंगे?
(6:8-8:4)

यदि मैं कहूं ''स्तिफनुस'' तो आप में से बहुत से लोग कहेंगे कि यह तो ''प्रथम मसीही शहीद'' है और यदि मैं कहूं ''प्रथम मसीही शहीद'' तो आप में से बहुतेरे स्तिफनुस का नाम लेंगे। स्तिफनुस का नाम हमारे मनों में हमेशा उन हज़ारों शहीदों में से सबसे पहले आएगा, जो यीशु के लिए मरे थे। हम स्तिफनुस के विषय में और क्या जानते हैं? क्या हम जानते हैं कि वह अपने विश्वास के लिए *क्यों* मरा? क्या हम अपनी मसीही विरासत में दिए गए उसके योगदान के बारे में जानते हैं?

स्तिफनुस टूटकर गिरने वाले एक तारे की तरह है, जो आकाश में चमकता है और फिर अलोप हो जाता है। उससे हमारा परिचय अध्याय 6 में खिलाने-पिलाने की सेवा करने के लिए चुने जाने वाले सेवक के रूप में करवाया जाता है। अध्याय 7 के अन्त तक उसकी मृत्यु हो जाती है। इतने कम समय में उसे परमेश्वर द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल किया जाता है।

उसके माता-पिता द्वारा दिया गया यह नाम उसके विजयी अन्त का पूर्वानुमान था। ''मुकुट'' के लिए नये नियम में दो शब्दों का प्रयोग किया गया है: *दियादिमा* (diadema) - यह वह शब्द है जिससे अंग्रेज़ी का शब्द ''डायाडिम'' निकला है, जिसका अर्थ है राजमुकुट (राजाओं के सिरों पर रखे जाने वाले मुकुट के समान [प्रकाशितवाक्य 19:12]) - और *स्तिफनॉस,* अर्थात *विजय* का मुकुट (जैसे ओलम्पिक खेलों में विजयी लोगों के सिरों पर रखा जाता था)। दूसरे शब्द (स्तिफनॉस) का इस्तेमाल प्रकाशितवाक्य 2:10 में किया गया है: ''प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का *मुकुट* दूंगा।'' स्तिफनुस मृत्यु तक विश्वासी रहा *था* और उसके जीवन को विजय के मुकुट से सुशोभित किया गया *था*!

इस पाठ और अगले दो पाठों के बाद उम्मीद है कि हम स्तिफनुस और उसके काम के बारे में अच्छी तरह समझ पाएंगे। मैं यह आशा भी करता हूं कि उसके उदाहरण से हम अपने जीवनों को और भी निकटता से देख सकेंगे। स्तिफनुस अपने विश्वास के लिए मरना चाहता था। हम किसके लिए मरना चाहेंगे?

विचार करने योग्य विश्वास (6:8-12)

हमारी कहानी 6:8 से आरम्भ होती है: ''और स्तिफनुस अनुग्रह (''विश्वास''; KJV) और सामर्थ से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े-बड़े अद्‌भुत काम और चिह्न दिखाया

करता था।''[1] स्तिफनुस का यह परिचय एक विशेष महत्व रखता है, जैसा कि लुईस फोस्टर ने टिप्पणी की:

> अभी तक, प्रेरितों की पुस्तक ने केवल प्रेरितों के आश्चर्यकर्मों की बात ही बताई थी (2:43; 3:4-8; 5:12)। परन्तु, प्रेरितों के हाथ रखने के बाद, अब स्तिफनुस को भी अद्भुत काम करते दिखाया गया है। जल्दी ही फिलिप्पुस भी ऐसा ही करेगा (8:6)।

आरम्भ में हमें बताया गया था कि स्तिफनुस विश्वास (6:5), बुद्धि (6:3) और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण (6:3, 5) था। अब हम पढ़ते हैं कि वह ''(परमेश्वर के) अनुग्रह[2] और सामर्थ से परिपूर्ण'' था। वह परमेश्वर से और जो उससे सम्बन्धित है, परिपूर्ण अर्थात उसके नियन्त्रण में था!

स्तिफनुस को खिलाने-पिलाने की विशेष सेवकाई मिली थी। परन्तु उसने इसे परमेश्वर के दिये हुए अन्य दानों का उपयोग न करने के लिए कोई बहाना नहीं बनाया।[3] उसने लोगों को चंगा किया और दूसरों को यीशु के बारे में बताया। अब तक वचन बताता है कि लोगों में शिक्षा का काम प्रेरितों के द्वारा मन्दिर में ही हो रहा था।[4] अब, स्तिफनुस यीशु के संदेश को बड़ी दृढ़ता से आराधनालय में ले गया। हम पढ़ते हैं, ''तब उस आराधनालय में जो लिबिरतीनों का कहलाता था, और कुरेनी और सिकन्दरिया और किलिकिया और एशिया के लोगों में से कई एक उठकर स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे'' (पद 9)।

प्रेरितों की पुस्तक में आराधनालय का यह पहला उल्लेख है। आराधनालय अथवा सिनागोग बाबुल की दासता के समय आरम्भ हुए थे, जब यहूदी लोग मन्दिर में आराधना नहीं कर सकते थे।[5] प्रेरितों के समय में पूरे रोमी साम्राज्य में आराधनालय जगह-जगह मिल जाते थे। यरूशलेम में ही सैकड़ों थे।[6] उस विशेष आराधनालय को जहां स्तिफनुस सुसमाचार लेकर गया ''लिबिरतीनों का आराधनालय'' कहा जाता था;[7] इस आराधनालय के सदस्य वे लोग थे जो दासता से स्वतन्त्र हुए थे।[8] कई कुरेने[9] या सिकन्दरिया से थे, ये दोनों स्थान भूमध्य सागर के दक्षिण में, उत्तरी अफ्रीका में थे। अन्य किलिकिया या एशिया से थे, ये दोनों स्थान समुद्र के उत्तर की ओर एशिया माइनर में थे।[10] फलस्तीन से कोई नहीं था; स्तिफनुस की तरह यूनानी भाषा बोलने वाले सभी यहूदी थे,[11] सम्भवत: मसीही बनने से पहले स्तिफनुस इस आराधनालय में आता था।

लूका ने शायद कुरेने, सिकन्दरिया, किलिकिया और एशिया का उल्लेख इसलिए किया क्योंकि उन स्थानों से आए लोगों को प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रमुख पात्र बनना था।[12] स्तिफनुस बीज छितरा रहा था, जिसने एक दिन पेड़ बनकर फल देना था। लूका द्वारा उल्लेखित एक *अति* महत्वपूर्ण स्थान किलिकिया है। किलिकिया की राजधानी तरसुस थी और तरसुस का एक जवान जिसका नाम शाऊल था, अब यरूशलेम में ही रहता था (7:58; 22:3)। शाऊल सम्भवत: उसी आराधनालय में सेवा करता था, जहां दूसरे किलिकिया वासी आराधना के लिए आते थे। हो सकता है कि वह उस समय वहीं

हो जब स्तिफनुस यीशु के विषय में बताने के लिए आया।[13]

हम निश्चित रूप से नहीं जानते कि आराधनालय में स्तिफनुस के संदेश की बात क्या थी। निश्चय ही उसका अधिकांश प्रचार अध्याय 2 से 4 में प्रेरितों द्वारा सुसमाचार के प्रचार जैसा ही होगा। शायद परमेश्वर ने उन निष्कर्षों को स्वर देने में अगुआई की, जिनका अर्थ स्पष्ट तो था परन्तु घोषित नहीं था।[14] पतरस और अन्य प्रेरितों ने यह ज़ोर दिया था कि यीशु के सिवाय किसी और से उद्धार नहीं है (4:12)। शायद स्तिफनुस ने स्पष्ट निष्कर्ष निकाले कि यहूदी लोग परमेश्वर के चुने हुए लोग होने के आधार पर या मूसा की व्यवस्था को मानने और अप्रेरित यहूदी परम्पराओं, अथवा मन्दिर में आराधना करने के आधार पर उद्धार नहीं पा सकते।[15]

स्तिफनुस का संदेश चाहे जो भी था, इसने आराधनालय में कइयों का क्रोध भड़का दिया था:[16] ''लोगों में से कई एक उठ कर स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे।'' शाऊल, जो कि युवा यहूदी बुद्धिजीवियों में शिरोमणि था, स्तिफनुस को बातों से शांत करने की कोशिश करने वालों में से एक होगा। परन्तु स्तिफनुस अपनी बात से नहीं हटा; वह डटा रहा। (देखिए 1 कुरिन्थियों 1:11; तीतुस 3:9) झगड़ालू और संघर्ष करने वाले में अन्तर है। यहूदा ने लिखा कि ''विश्वास के लिए पूरा यत्न'' (यहूदा 3) करना चाहिए। पतरस ने लिखा, ''मसीह को प्रभु जानकर अपने-अपने मन में पवित्र समझो और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे *उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो,* पर नम्रता और भय के साथ'' (1 पतरस 3:15)। कुछ लोग कहते हैं कि धार्मिक विवादों के दिन अब नहीं रहे। रूखे, अधर्म और गैर मसीही विवादों का समय बीत गया है। किन्तु ''नम्रता और भय'' के साथ किए जाने वाले विवाद कभी समाप्त नहीं होंगे।

स्तिफनुस एक था, जबकि उसके विरोधी बहुत थे। वे उस पर प्रश्नों, तर्कों, आपत्तियों की हर ओर से बौछार कर रहे होंगे। ऐसे हालात में सच्चाई की रक्षा करना कठिन होता है! प्रेरितों 7:10 कहता है, ''परन्तु उस ज्ञान और उस आत्मा[17] का जिससे वह बातें करता था, वे साम्हना न कर सके।'' अध्याय सात में स्तिफनुस का प्रवचन सुझाव देता है कि उसने अपने विरोधियों को किस प्रकार उत्तर दिया। उसने जो भी बात बताई उसके लिए पुराने नियम से ''अध्याय और आयत''[18] का उद्धरण दिया! वे अपने ही शास्त्रों से कैसे विवाद कर सकते थे?

स्तिफनुस की ईश्वरीय बुद्धि से हारने वालों में यदि शाऊल भी था, तो अपनी हार से उसे गहरा झटका लगा होगा जिसने यीशु के सभी अनुयायियों के प्रति घृणा की आग में घी का काम किया होगा![19] (मैं कल्पना कर सकता हूं कि एक दिन पौलुस लूका को सिर हिलाते हुए और यह कहते हुए इसके बारे में बता रहा है, ''मैंने शास्त्र के हर एक पद का और हर ढंग का जो गमलीएल ने मुझे सिखाया था, उपयोग किया परन्तु स्तिफनुस ने *फिर भी* मुझे हरा दिया!'')

जब वे स्तिफनुस को बातों से चुप नहीं करा सके तो कई लोगों ने उसे किसी भी तरह चुप कराने का संकल्प लिया होगा।[20] ''इस पर उन्होंने कई लोगों को उभारा जो कहने

लगे कि हम ने इसे मूसा और परमेश्वर के विरोध में निंदा[21] की बातें कहते सुना है'' (पद 11)। यूनानी अनुवादित शब्द ''उभारा'' का अक्षरश: अर्थ है ''टू थ्रो अन्डर (अर्थात मेज़ के नीचे से)।'' स्तिफनुस के शत्रुओं ने छल का ढंग अपनाया। इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्हें अनुचित रूप से धन दिया गया था अर्थात गवाहों को रिश्वत दी गई होगी।

पतरस और अन्य प्रेरितों की पिछली सुनवाइयों में हमने देखा कि उन्हीं दावपेंचों का उपयोग किया गया जो यीशु को दोषी ठहराने के लिए इस्तेमाल किए गए थे। स्तिफनुस को सभा के सामने लाते समय भी ऐसा ही हुआ था क्योंकि स्तिफनुस के शत्रुओं की तरह ही मसीह के शत्रु भी ''यीशु को मार डालने के लिए उसके विरोध में झूठी गवाही की खोज में थे'' (मत्ती 26:59)। स्तिफनुस के विरुद्ध लगाए गए आरोप झूठे थे (देखिए 6:13), जो कि उसके शब्दों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करने के कारण था। उसने यह तो सिखाया कि मूसा की व्यवस्था का पालन करने से किसी का उद्धार नहीं हो सकता परन्तु उसने मूसा की *निंदा* नहीं की थी। इसी प्रकार उसने निश्चय ही कभी भी परमेश्वर की निंदा नहीं की!

तथापि, स्तिफनुस के विरुद्ध लहर चलाने के लिए ये आरोप पर्याप्त थे। ''और (वे) लोगों और प्राचीनों और शास्त्रियों को भड़काकर चढ़ आए''[22] (आयत 12क)। अब तक बेशक सदूकी लोग मसीहियों से घृणा करते थे क्योंकि वे पुनरुत्थान का प्रचार करते थे परन्तु मसीह के अनुयायी समस्त यहूदी जाति के सम्मान का आनन्द लेते थे।[23] अब वह स्थिति बदल गई:[24] ''और [जब वह प्रचार कर रहा था और लोगों को चंगाई दे रहा था; देखिए 6:8,10] उसे पकड़कर[25] महासभा के सामने ले आए'' (आयत 12ख)।

विश्वास जो रक्षा के योग्य है (6:13-7:53)

एक बार फिर से यीशु का एक अनुयायी शक्तिशाली महासभा के सामने खड़ा हुआ।[26] स्तिफनुस को पकड़कर लाने वालों ने वहां पर ही अपनी गवाहियां देने में कोई समय नहीं गंवाया:

> और झूठे गवाह खड़े किए, जिन्होंने कहा कि यह मनुष्य इस पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरोध में बोलना नहीं छोड़ता। क्योंकि हम ने उसे यह कहते सुना है, कि यही यीशु नासरी इस जगह को ढा देगा, और उन रीतों को बदल देगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं[27] (6:13, 14)।

उन्होंने एक तथ्य सही दिया। इसमें कोई संदेह नहीं कि स्तिफनुस उस यीशु के बारे में ''बोलना नहीं छोड़ता'' था, जिसे वह प्यार करता था! बाकी यीशु के सभी शब्दों को (जो स्तिफनुस ने उद्धृत किए होंगे) जानबूझ कर गलत ढंग से बताया जाना था। यीशु ने कहा *था* कि यहूदी अपनी अप्रेरित परम्पराओं के कारण परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ते हैं

(तु. मत्ती 15:3)। यीशु ने कहा *था* मन्दिर ढहा दिया जाएगा (मत्ती 24:1, 2)।[28] यीशु ने यह कभी नहीं कहा कि *वह* मन्दिर को नाश करेगा, न ही उसने उस शिक्षा के विरुद्ध कभी कुछ कहा था, जो वास्तव में मूसा से आरम्भ हुई थी।

न्यायालय में गम्भीर आरोप लगने के बाद हम स्वयं ही मुड़कर आरोपी की प्रतिक्रिया जानने के लिए उसकी ओर देखते हैं (शायद इस आशा से कि उसके चेहरे का भाव बता देगा कि वह दोषी है)। स्तिफनुस के विरुद्ध आरोप लगने के बाद सभा में उपस्थित सभी लोगों ने ''उसकी ओर ताक कर उसका मुखड़ा ... देखा।'' वे क्या देखने की आशा कर रहे होंगे? एक आदमी जो आरोपी दिखाई दे रहा हो? एक आदमी जो सहमा हुआ हो? एक आदमी जो डरा हुआ दिखाई दे रहा हो? उनकी आशा चाहे कुछ भी हो, नज़र उन्हें कुछ और ही आया। ''तब सब लोगों ने जो सभा में बैठे थे, उसकी ओर ताककर उसका मुखड़ा स्वर्गदूत सा देखा'' (6:15)। क्या इसका अर्थ यह है कि वह शांत और आश्वस्त था? क्या इसका यह अर्थ है कि प्रभु की महिमा उसके चेहरे पर वैसे ही थी जैसे मूसा के चेहरे पर थी जब वह पहाड़ से नीचे आया (निर्गमन 34:29), या जैसे यीशु के चेहरे पर थी जब पहाड़ पर उसका रूपान्तरण हुआ था (मत्ती 17:2)?[29] हमें पता चल सकता है कि अपने पाप को स्वीकार कर कांपने के बजाय उन्होंने एक रूपान्तरित मसीही को देखा!

महायाजक[30] ने शीघ्र ही वहां जाकर स्तिफनुस से पूछा कि क्या उस पर लगाए गए आरोप सही भी हैं: ''क्या ये बातें यों ही हैं?'' (प्रेरितों 7:1)। व्यवस्था के अनुसार, स्तिफनुस को उत्तर देने की आवश्यकता नहीं थी। वह उत्तर देने के खतरे से अवगत ही होगा। यद्यपि, प्रेरितों की तरह मनुष्यों के प्राणों के उद्धार की कोशिश में उसने भी प्रचार करने के लिए मिले अवसर का उपयोग किया।

7:2-53 में स्तिफनुस का प्रतिवाद, एक प्रवचन है। इस प्रवचन में स्तिफनुस ने लगाए गए आरोपों के विरुद्ध प्रतिवाद तो किया ही परन्तु उसने बात को ठिकाने पर लाकर कहा कि आरोपी वह नहीं, बल्कि उस पर आरोप लगाने वाले ही हैं। वे उसी बात के लिए आरोपी थे जिस बात के लिए उन्होंने उस पर आरोप लगाया था! मन फिराकर परमेश्वर की ओर लौटने की आवश्यकता उसे नहीं, बल्कि उन्हें थी! हम अपने अगले पाठ में इस प्रवचन का विस्तार से अध्ययन करेंगे; अब के लिए, आइए कंपकंपी लगा देने वाले निष्कर्ष पर ध्यान दें:

> हे हठीले, और मन और कान के खतनारहित लोगो, तुम सदा पवित्र आत्मा का साम्हना करते हो। जैसा तुम्हारे बापदादे करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो। भविष्यवक्ताओं में से किस को तुम्हारे बापदादों ने नहीं सताया, और उन्होंने उस धर्मी के आगमन का पूर्वकाल से संदेश देने वालों को मार डाला, और अब तुम भी उसके पकड़वाने वाले और मार डालने वाले हुए (7:50ख-52)।

ये बातें कहते हुए स्तिफनुस को मालूम था कि वह क्या जोखिम उठा रहा था। उसकी बातों का परिणाम पुनर्जीवन अथवा परित्याग, छुटकारा अथवा मृत्यु, उद्धार अथवा पथराव हो सकता था।

विश्वास जिसके लिए मरना योग्य है (7:54-60)

पुनर्जीवन तो नहीं था। पद 54 ध्यान दिलाता है, ''ये बातें सुनकर वे जल गए ...।'' वाक्यांश ''जल गए'' वैसा ही है जैसा 5:33 में मिलता है जब गमलीएल के हस्तक्षेप करने से पहले सभा प्रेरितों को मारने के लिए तैयार थी। इसका अक्षरश: अर्थ है ''उनके हृदय चीरे गए थे'' जैसे कि एक आरे से काटे गए हों। अपने पापों से मन फिराने के बजाय, ''वे उग्र हो गए'' (NIV) ''और उस पर दांत पीसने लगे'' (पद 54ख)। क्रोध में वे अपने जबड़ों को इतने ज़ोर से पीस रहे थे कि उनके दांत एक दूसरे से रगड़ रहे थे।[31] (वाक्यांश ''दांतों का पीसना'' साधारणत: नरक के दण्ड के सम्बन्ध में इस्तेमाल होता है, इसलिए शायद लूका सुझाव दे रहा है कि सभा ने उनके जैसी प्रतिक्रिया दी जिनका अनन्त लपटों में जाना तय था![32])

इस बार घृणा की लपटों को शांत करने के लिए कोई गमलीएल नहीं बोला।[33] अपने आस-पास उन्मत्त भीड़ को देखकर स्तिफनुस ने अवश्य ही जान लिया होगा कि मृत्यु निकट है। यह पल केवल धरती पर ही नहीं, बल्कि आसमान पर भी महत्वपूर्ण था और परमेश्वर ने स्तिफनुस को स्थिर रहने के लिए एक विशेष दर्शन दिया।[34] घृणा से भरे कुरूप चेहरे स्तिफनुस की आंखों से ओझल हो गए थे; उनके स्थान पर उसकी आखों में प्रेम से भरा एक सुन्दर चेहरा समा गया था। ''परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर पाया'' (देखिए 7:55)। यीशु स्वर्ग में वापस जाकर पिता के दाहिने हाथ बैठ गया (मरकुस 16:19; भजन संहिता 110:1, 4; इब्रानियों 1:13; 8:1, 2 भी देखिए)। तथापि, अब वह आदर सहित विश्वास के लिए अपनी इच्छा से मरने को तैयार *था*।[35]

स्तिफनुस ने कहा, '' 'देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र[36] को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूं' '' (7:56)। यीशु की सुनवाई के समय महायाजक ने पूछा था, ''क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह है?'' यीशु ने उत्तर दिया था, ''हां मैं हूं; और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे ... देखोगे।'' उस बात पर महायाजक ने चिल्लाते हुए अपने वस्त्र फाड़ दिए थे, कि ''अब हमें गवाहों का और क्या प्रयोजन चाहिए? तुम ने यह निन्दा सुनी'' (मरकुस 14:61-63)! यदि यीशु यह दावा करने के लिए कि वह परमेश्वर के दाहिने हाथ *बैठेगा,* निन्दा का दोषी था तो स्तिफनुस यह कहने के लिए निन्दा का दोषी *था* कि यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा था।[37]

यीशु को देखने का स्तिफनुस का दावा एक अन्तिम तिनका था![38] प्रतिष्ठित सभा के सदस्यों ने न्यायाधीशों वाले अपने वस्त्र पहने ''बड़े शब्द से चिल्लाकर'' स्तिफनुस के उन्मुक्त शब्दों के स्वर को शांत करने के लिए अपने हाथों से अपने ''कान बन्द कर लिए'' और ''एक चित्त होकर उस पर झपटे'' (7:57)। यह सर्वोच्च न्यायालय के सम्मानित न्यायाधीशों का सीटों से उठकर, अपने काले वस्त्रों में से स्वचालित हथियार निकालकर अपने सामने प्रतिवादियों को भून डालने के जैसा ही है![39] यदि आत्मा की प्रेरणा से किसी व्यक्ति ने न कहा होता कि ऐसा ही हुआ है तो इस दृश्य पर विश्वास करना कठिन होता!

इसके बाद जो कुछ भी हुआ वह रोमी व्यवस्था[40] और यहूदी व्यवस्था[41] दोनों के अनुसार अवैध था। इससे पहले प्रेरितों के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाता यदि गमलीएल सभा को शांत न करता। ''और उसे नगर के बाहर निकालकर पत्थरवाह करने लगे'' (7:58क)। स्तिफनुस को चुप करवाने में असफल होने पर उन्होंने उसके विरुद्ध झूठ बोला। उसका उत्तर देने में असमर्थ होने पर उन्होंने उसे मार डाला। सच्चाई को दबाने के लिए झूठ का हमेशा यही उत्तर होता है।

बेशक, मुकदमे की कार्यवाही में वैधता का दिखावा किया गया था। स्तिफनुस को परमेश्वर को निन्दा का दोषी ठहराया गया था और निन्दा का दण्ड पत्थरवाह था (लैव्यव्यवस्था 24:10-23; व्यवस्थाविवरण 13:6-11)। इसलिए उन्होंने उस पर पत्थरवाह किया। यहूदी परम्परा[42] कहती थी कि मृत्यु-दण्ड नगर में नहीं दिया जाए, सो वे उसे यरूशलेम से बाहर खींच कर ले गए (ध्यान दें 1 राजा 21:13)। दोषी के विरुद्ध गवाही देने वाले को ही पहला पत्थर मारना पड़ता था (व्यवस्थाविवरण 17:7; ध्यान दें यूहन्ना 8:7)। इस कारण हम पढ़ते हैं कि ''गवाहों ने अपने कपड़े ... उतार रखे'' (7:58ख)। यह इसलिए था कि वे आसानी से पत्थर मार सकते थे।

उन्होंने ''अपने कपड़े शाऊल नाम के एक जवान[43] के पांवों के पास उतार रखे'' थे (7:58ग)। हम यहां शाऊल (जिसे बाद में पौलुस के नाम से जाना जाने लगा) के बारे में पहली बार पढ़ते हैं परन्तु हमने सुझाव दिया है कि सम्भवत: वह यूनानी भाषा बोलने वालों के आराधनालय में स्तिफनुस के साथ बहस में शामिल था। इसमें कोई शक नहीं कि वह स्तिफनुस की सुनवाई[44] के लिए सभा में उपस्थित था और सम्भवत: उनमें से एक था जो स्तिफनुस पर जंगली जानवरों की तरह टूट पड़े थे। 7:60 में हम पढ़ते हैं कि ''शाऊल उसके वध के लिए सहमत था।'' बाद में एक प्रार्थना में पौलुस ने कहा, ''और जब तेरे गवाह स्तिफनुस का लोहू बहाया जा रहा था तब मैं भी वहां खड़ा था, और उसके घातकों के कपड़ों की रखवाली करता था'' (22:20)।

गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल को ही रखवाली के लिए क्यों दिए, किसी अन्य को क्यों नहीं? शायद यह इस ओर संकेत करता है कि शाऊल उसे मृत्यु दण्ड देने वालों का इंचार्ज (मुखिया) था;[45] शायद यह मात्र संयोग ही था। हम यह निश्चित तौर पर कदापि नहीं जान सकते कि गवाहों ने शाऊल के पास अपने कपड़े क्यों रखे परन्तु हम अनुमान लगा सकते हैं कि लूका ने उसका विवरण हमें क्यों बताया, शायद यह दिखाने के लिए कि शाऊल प्रत्येक बात में कैसे शामिल था और उसके मन में जलन क्यों थी (22:20; तु. 1 तीमुथियुस 1:13)।

पत्थरवाह होना मृत्यु का एक भयंकर ढंग था। यदि सभा स्तिफनुस को पत्थरवाह करने के लिए निर्धारित स्थान पर ले गई तो उन्होंने उसे एक चोटी से नीचे फेंक दिया होगा और फिर बड़े-बड़े पत्थर उस पर मारे होंगे जब तक कि श्वास निकलने के बाद उसका शरीर पिस नहीं गया होगा।[46] क्योंकि यह उग्र भीड़ का काम था, हो सकता है कि उन्होंने उसे घेरा हो और गालियां निकालते हुए उस पर पत्थर मारने लगे हों।

प्रत्येक चक्रवाती तूफान के बीच एक ''शून्य'' होता है, जहां सारा वातावरण शांत होता है। घृणा के भंवर में फंसा स्तिफनुस शांत था। उसके अन्तिम पल प्रेरितों 7:59, 60 में दर्ज किए गए हैं:

> और वे स्तिफनुस को पत्थरवाह करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा; कि हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा[47] को ग्रहण कर। फिर घुटने टेककर[48] ऊंचे शब्द से पुकारा, हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा, और यह कहकर सो गया।[49]

होंठों पर अपने हत्यारों के लिए प्रार्थना करते हुए स्तिफनुस कैसे मर सकता था? क्योंकि उसने उसके आत्मा को पा लिया था, जिसने क्रूस पर प्रार्थना की थी, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं'' (लूका 23:34), और जिसने अपनी जान परमेश्वर को सौंप दी थी: ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं'' (लूका 23:46)।[50] शाऊल इस दृश्य को अपने मन से कभी मिटा नहीं सकता था। बाद में आगस्टिन ने सुझाव दिया, कि ''कलीसिया को पौलुस का प्रचार स्तिफनुस की प्रार्थना के कारण ही मिला है।''[51]

परन्तु, कुछ पल के लिए स्तिफनुस के लोहू से उन्मत्त शाऊल कलीसिया को नाश करने का मन बनाकर एक जंगली जानवर[52] बन गया था। स्तिफनुस की मृत्यु के वृत्तांत के तुरन्त बाद हम पढ़ते हैं:

> उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और ... शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; और घर-घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों को घसीट घसीटकर बन्दीगृह में डालता था (8:1क, 3)।

स्तिफनुस प्रथम मसीही शहीद था, परन्तु यह अन्त नहीं था।

सारांश

स्तिफनुस अपने विश्वास के लिए मरने का इच्छुक था। मेरी इच्छा है कि हम अपने आप से यह प्रश्न पूछें, ''मैं किस के लिए मरना चाहूंगा?'' लोग अपने देश के लिए मरते हैं। लोग अपने परिवारों के लिए मरते हैं। लोग अपनी उस बात के लिए मरते हैं, जिसमें उनका विश्वास होता है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि स्तिफनुस जैसे लोग यीशु में अपने विश्वास के लिए मरना चाहते हैं, आज तक भी। क्या आप अपने विश्वास के लिए मरना चाहेंगे?

इस प्रश्न पर चिन्तन करते हुए यह ध्यान दें कि आप अपने विश्वास के लिए कभी नहीं मर सकते जब तक कि आप पहले इसके लिए *जीने* की इच्छा नहीं रखते। स्तिफनुस का मसीह के समान व्यवहार उसके शरीर पर पत्थर पड़ने से अकस्मात ही नहीं बढ़ गया

था। उससे बहुत पहले ही उसने अपना जीवन प्रभु को सौंप दिया था और उसे ''आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण,'' ''विश्वास से परिपूर्ण,'' और ''अनुग्रह और सामर्थ से परिपूर्ण'' कहा जा सकता था। उसकी विजयी मृत्यु में विजयी जीवन की एक झलक मिलती है।

क्या आपने अपना जीवन यीशु को समर्पित किया है? यदि आपको अभी मरना पड़े, तो क्या आप प्रार्थना कर सकते हैं, ''हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर'' और यह *जान* सकते हैं कि यीशु बाहें फैलाए आपको ग्रहण करने के लिए प्रतीक्षा कर रहा है? विजय का मुकुट (2 तीमुथियुस 4:8; यू.: *स्तिफनॉस*) आपकी प्रतीक्षा कर रहा है, जैसे स्तिफनुस के लिए था परन्तु केवल तभी यदि आप अपना जीवन प्रभु को सौंप दें। इस्राएलियों ने परमेश्वर के भेजे हुए छुटकारा देने वालों को अस्वीकार करके गलती की। आप मसीह को अस्वीकार करने की गलती न करें!

विजुअल-एड नोट्स

मेरे एक मित्र, लॉय स्मिथ ने स्तिफनुस पर अपने पाठ का आरम्भ स्तिफनुस पर पत्थर मारते हुए दिखाकर किया। स्तिफनुस के चित्र के ऊपर ये शब्द थे ''स्तिफनुस को पत्थरों से मौत के घाट उतारा गया।'' प्रस्तुति के अन्त में उसने चित्र के नीचे ये शब्द जोड़ दिए: ''हाल ही में हमने किसे पत्थरवाह किया है?'' फिर उसने पत्थरों पर यह चिपका दिया ''दूसरों के विषय में झूठी बातें,'' ''निन्दा,'' ''क्रोध से भरी बातें,'' ''अनुचित आलोचना,'' ''फुसफुसाहट,'' इत्यादि।

प्रवचन नोट्स

शास्त्र के इस भाग पर काम करते हुए अनेक शीर्षक और मुख्य शीर्षक मेरे मन में आए। पाठ को ''एक आदमी जिसे परमेश्वर ने विजय का मुकुट पहनाया'' का नाम भी दिया जा सकता था और इसके मुख्य भाग (1) एक आदमी और उसका मिशन (6:8-12); (2) एक आदमी और उसका संदेश (6:13-7:53); (3) एक आदमी और उसका शहीद होना (7:54-60) हो सकते हैं। पाठ को (1) तर्क-वितर्क द्वारा विजय; (2) अपना बचाव करते हुए विजय; (3) मृत्यु के द्वारा विजय शीर्षकों के साथ ''परमेश्वर हमें विजय देता है'' (1 कुरिन्थियों 15:57) का नाम दिया जा सकता है।

पाद टिप्पणियां

[1]हमें यह नहीं बताया गया कि स्तिफनुस ने क्या अद्भुत काम और चिह्न दिखाए। हम मान लेते हैं कि वे उसी प्रकार के होंगे जैसे कि प्रेरितों ने किए थे अर्थात चंगाई और दुष्ट आत्माओं को निकालना। स्पष्टत: उसे भी आत्मा की प्रेरणा से बोलने का दान दिया गया था (देखिए 6:10 पर नोट्स)। [2]''अनुग्रह से परिपूर्ण''

का अर्थ यह हो सकता है कि स्तिफनुस अनुग्रह से भरा एक व्यक्ति था, जिसके पक्ष में लोग थे या यह कि परमेश्वर का अनुग्रह उस पर विशेष ढंग से था। वह अनुग्रह से भरा हुआ एक व्यक्ति *था* (7:2); वह आरम्भ में लोगों के पक्ष में खड़ा हुआ *होगा*; परन्तु बाद की घटनाओं के प्रकाश में यह अनुवाद सम्भवत: सही है कि वह ''(*परमेश्वर के*) अनुग्रह और सामर्थ से परिपूर्ण'' था। [3]हम में से हर एक को अपनी विशेष सेवकाई को खोजना चाहिए अर्थात प्रभु की कलीसिया में वह विशेष काम जो परमेश्वर ने हमारे लिए ठहराया है। यदि हर एक सदस्य ऐसा करे तो इससे प्रभु के काम में क्रान्ति आ जाएगी! परन्तु, यदि हम ऐसा करते हैं तो हमें कभी भी राज्य में कोई दूसरा काम न करने का बहाना नहीं बनाना चाहिए। हम सब को भी आसान आज्ञाएं दी गई हैं, जिनका हमें पालन करना आवश्यक है चाहे हमारे पास उसी प्रकार के ''विशेष दान'' हों या न हों। उदाहरण के लिए हम 8:1-4 में ध्यान देंगे कि *हर* एक मसीही वचन को फैलाने लगा। मुझे यक़ीन है कि उनमें से हर एक को सुसमाचार प्रचार करने का विशेष दान नहीं मिला था। [4]शिक्षा घरों में दी जाती थी (2:46)। [5]शब्दावली में देखें ''आराधनालय।'' [6]एक प्राचीन लेखक कहता है कि यरूशलेम में 480 आराधनालय थे। प्रेरितों 6:9 संकेत देता है कि आराधनालयों का आरम्भ अलग-अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों की सहायता के लिए हुआ था ताकि लोग वहां आराम महसूस कर सकें। विद्वान लोग पद 9 में उल्लेखित हर समूह के लिए पांच आराधनालय तक ढूंढ लेते हैं। सम्भव है कि स्तिफनुस यीशु की कहानी बताने के लिए यूनानी भाषा के लोगों के एक से अधिक आराधनालयों में गया हो। क्योंकि मूल भाषा के शास्त्र और हिन्दी अनुवाद दोनों ही ''आराधनालय'' के लिए एकवचन का प्रयोग करते हैं, इसलिए यह पाठ केवल एक का ही हवाला देगा। [7]हिन्दी का यह अनुवाद KJV से लिया गया लगता है जिसका मूल अर्थ धार्मिक विषयों में स्वतन्त्र विचार वाले हैं (देखिए बाइबल सोसायटी द्वारा हिन्दी के नये नियम का नया अनुवाद), परन्तु आज यह केवल उनके विषय में ही है जो बिना किसी नैतिक संयम के रहते हैं। इसलिए, ''स्वतन्त्रता प्राप्त दल'' का अनुवाद ही माननीय है। [8]या तो वे या उनके बाप-दादा गुलाम थे। यहूदियों की काफ़ी संख्या रोमी सेनापति पोम्पे ने बन्दी बनाई और बाद में उनको रोम में छोड़ दिया। अन्य गुलाम यहूदी भी बाद के वर्षों में छोड़ दिए गए। [9]कुरेने का रहने वाला शमौन यीशु का क्रूस उठाकर गया था (लूका 23:26)। [10]क्योंकि ये स्थान एक दूसरे से बहुत दूर हैं और (सम्भवत:) इनका आपस में कम ही सम्बन्ध होगा, कई यह ज़िद करते हैं कि यहां पर कम से कम दो आराधनालयों का दृश्य है: एक उनके लिए जो सागर के दक्षिण की ओर रहने वाले थे और दूसरा उनके लिए जो सागर की ओर उत्तर के रहने वाले थे। तथापि यदि सभी स्वतन्त्रता प्राप्त थे तो अवश्य ही उनका कुछ साझा होगा।

[11]6:1 पर नोट्स देखिए। [12]कुरेने के लोग अन्ताकिया में सुसमाचार ले गए (11:20)। अपुल्लोस सिकन्दरिया से था (18:24)। पौलुस की बाद की गिरफ्तारी के लिए एशिया के यहूदी ज़िम्मेदार थे (21:27; 24:18,19)। (क्या इनमें से वे भी हो सकते हैं जिन्होंने स्तिफनुस को परेशान किया था?) [13]कइयों ने यह सम्भावना व्यक्त की है कि उत्तर देने के लिए आराधनालय के अगुओं ने शाऊल को बुलाया था। इसकी काफ़ी सम्भावना है कि किलिकिया से होने के कारण शाऊल का वहां होना स्वाभाविक था। [14]कलीसिया के आरम्भिक दिनों में परमेश्वर अपनी इच्छा को एक समय में थोड़ा (या काफ़ी) जितनी आवश्यकता होती, प्रकट कर देता था। अध्याय 10 में पतरस को दिए गए दर्शन पर ध्यान दें। तथापि, अन्त में, परमेश्वर ने अपने प्रकाशन को पूरा कर लिया (यहूदा 3)। आज हमारे पास निरन्तर मिलने वाला प्रकाशन नहीं है। [15]ध्यान दें कि स्तिफनुस के विरुद्ध लगाए गए आरोपों का सम्बन्ध मूसा और परमेश्वर के विरुद्ध और मन्दिर और व्यवस्था के विरुद्ध बोलने के बारे में था (6:11, 13, 14)। आरोप झूठे थे परन्तु झूठ को प्रभावशाली दिखाने के लिए उन्हें सत्य की आवश्यकता थी। ये झूठ तथा अध्याय सात में स्तिफनुस का प्रतिपक्ष हमें कुछ संकेत देते हैं कि जिस बात का स्तिफनुस प्रचार कर रहा था, वह कितनी अप्रिय थी। [16]स्तिफनुस के संदेश की विषयवस्तु के अतिरिक्त यह तथ्य कि बहुत से याजक विश्वास के अधीन हो गए थे (6:7), से भी स्थिति भयानक हो गई। [17]अतिप्राचीन पाण्डुलिपियां या तो सभी बड़े अक्षरों में हैं या सभी छोटे अक्षरों में। इस कारण हम नहीं जानते कि इसका अर्थ स्तिफनुस की आत्मा है या पवित्र आत्मा। लगता है कि संदर्भ इस विचार के पक्ष में है कि स्तिफनुस ने अपनी बहादुरी से नहीं, बल्कि परमेश्वर की सहायता से यह विजय पाप्त

कर ली थी। अंग्रेज़ी के बहुत से अनुवादों में आत्मा के लिए शब्द Spirit का पहला अक्षर (S) बड़ा है। [18]बेशक, स्तिफनुस के समय पुराना नियम अध्यायों और पदों में बंटा हुआ नहीं था। वाक्यांश ''अध्याय और पद'' का अर्थ केवल यह है कि स्तिफनुस ने अपने तर्कों के लिए पवित्र शास्त्र का सहारा लिया। [19]मसीहियों के प्रति शाऊल की घृणा रातों-रात नहीं बढ़ी थी। स्तिफनुस का प्रचार और फिर स्तिफनुस का उन्हें निरुत्तर करने वाला प्रतिवाद यीशु के नाम के विरुद्ध पागलपन की सीमा तक शाऊल की घृणा के लिए चक्की का पत्थर बना होगा। [20]मैं नहीं मानता कि शाऊल ने गवाहों को घूस दी होगी (22:3; 23:1)।

[21]''निन्दा'' किसी के ''विरोध में बोले गए'' शब्दों को कहा जाता है। शब्दावली में देखिए ''Blasphemy ईश्वर की निन्दा''। [22]बहुत से शास्त्री और फरीसी। (शब्दावली में देखिए ''शास्त्री''। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' की शब्दावली में ''फरीसी'' भी देखिए।) अब तक मसीहियों को सताने में सदूकी ही आगे थे क्योंकि प्रेरित पुनरुत्थान की शिक्षा देते थे, जिसमें सदूकी विश्वास नहीं करते थे परन्तु फरीसी करते थे। परन्तु, अब यह आरोप था कि स्तिफनुस मूसा, व्यवस्था, और यहूदी परम्पराओं के विरुद्ध बोला था और फरीसी उसके साथ हो लिए! [23]बेशक सदूकी राजनीतिक रूप से शक्तिशाली थे परन्तु आम लोगों पर उनका प्रभाव कम था। [24]यीशु ने देखा कि लोगों की राय कितनी जल्दी रविवार को ''होसन्ना'' के नारों से शुक्रवार को ''उसे क्रूस दो'' तक बदल सकती है! स्तिफनुस के मामले में धार्मिक प्रतिक्रिया के अलावा यह आरोप कि स्तिफनुस परमेश्वर और मूसा के विरुद्ध बोल रहा था, ये एक राजनीतिक प्रतिक्रिया भी होगी। यरूशलेम की आर्थिकता इस तथ्य पर आधारित थी कि वहां मन्दिर था (जिस कारण लाखों लोग हर साल वहां आते थे) और स्तिफनुस पर मन्दिर के विरोध में बोलने का आरोप था! (मूर्तिपूजकों के एक मन्दिर के बारे में ऐसी ही प्रतिक्रिया के लिए ध्यान दें प्रेरितों 19:23-41)। [25]''ले आए'' का अर्थ यह नहीं कि वे स्तिफनुस को खींचते हुए, ठुड्डे मारते हुए और रगड़ते हुए सभागृह तक ले आए (''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में 5:26 पर नोट्स देखें)। अनुवादित यूनानी शब्द ''ले आए'' साधारण तौर पर उनके इस काम के अनापेक्षित स्वभाव की ओर ध्यान दिलाता है। NIV में इस विचार की झलक मिलती है: ''उन्होंने स्तिफनुस को *पकड़ा*।'' [26]स्तिफनुस को अकेले ही खड़े चित्रित किया गया है, जिससे संकेत मिलता है कि यह कार्यवाही बन्द कमरे में हुई थी और प्रेरितों में से भी वहां कोई प्रवेश नहीं कर सकता था। [27]यहूदियों की व्यवस्था की अलिखित विधि थी, जिसे मूसा ने मौखिक रूप से दिया था और पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही थी। इस प्रकार वे परम्पराओं/रीतियों को व्यवस्था की तरह ही मान्यता देते थे। स्पष्टत:, यीशु ने इन अलिखित नियमों को परमेश्वर से होने की मान्यता नहीं दी। उसने सिखाया कि व्यवस्था में *परमेश्वर की* आज्ञाएं थीं, जबकि शास्त्र से बाहर परम्पराएं/रीतियां *मनुष्य की* आज्ञाएं थीं। [28]यीशु रोमियों द्वारा सत्तर ईस्वी में यरूशलेम के विनाश की बात कर रहा था। यीशु की एक और शिक्षा को गलत समझा गया जब उसने अपने शरीर को ''इस मन्दिर'' कहा (देखिए यूहन्ना 2:18-22; मरकुस 14:58; 15:29)। [29]स्तिफनुस की सुनवाई के अद्‌भुत होने के सम्बन्ध में मुख्य आरोप यह है कि यदि उन्होंने वहां आश्यर्चकर्म देखा होता तो सभा ऐसी प्रतिक्रिया नहीं करती जैसे उसने की। तथापि, सभा के कठोर मनों में अन्य आश्यर्चकर्मों से भी विश्वास पैदा नहीं हुआ (4:16)। [30]महायाजक या तो हन्ना था या कैफा। क्योंकि कार्यकारी महायाजक ही सन्हेद्रिन या यहूदियों की महासभा की प्रधानगी करता था, इसलिए मैं मान लेता हूं कि यह कैफा ही था।

[31]KJV में ''उन्होंने उस पर अपने दांतों से पीसा है,'' जो यह प्रभाव दे सकता है कि उन्होंने स्तिफनुस को काटने की कोशिश की! ''उस पर'' से ''उस पर'' को प्राथमिकता दी जा सकती है। बाइबल में दांत पीसना साधारणतया प्रचण्ड क्रोध (अय्यूब 16:9; भजन 35:16) या हताश होने (लूका 13:28) का संकेत देता है। आज इसे दबाव के चिह्न के रूप में पहचाना जाता है। [32]मत्ती 8:12; 13:42, 50; 24:51; 25:30; लूका 13:28. यूनानी अनुवादित शब्द ''पीसना'' का अनुवाद ''काटना'' हो सकता है व लूका सभा की तुलना जंगली कुत्तों के झुण्ड से कर रहा हो! [33]क्या इस बार गमलीएल वहां नहीं था? क्या उसने दूसरी बार सभा का विरोध करना ठीक न समझा? यह विश्वास करना कठिन होगा कि गमलीएल ने इस बुरे दिन की कार्यवाही को स्वीकृति दे दी थी। [34]परमेश्वर ने कई बार पौलुस को इस प्रकार दर्शन दिए (ध्यान दें 18:9, 10; 23:11; 27:23, 24)। बेशक लूका ने यह दर्शन उन्हें उत्साहित करने के लिए दिया जिन्होंने बाद में

अपने विश्वास के लिए अपनी जान दे देनी थी। [35]हम किसी के सम्मान के लिए अपने पांवों पर खड़े होते हैं। और सुझाव दिए गए हैं कि यीशु को बैठे होने के बजाय खड़े हुए क्यों चित्रित किया गया है। वह खुली बाहों से स्तिफनुस का स्वागत करने के लिए तैयार खड़ा था; वह स्तिफनुस का सहायक होने के लिए और परमेश्वर के सामने उसका अंगीकार करने के लिए खड़ा था; वह स्तिफनुस के हत्यारों का न्याय करने के लिए तैयार खड़ा था; आदि। कारण कुछ भी हो अधिकतर टीकाकारों का मानना है कि इस तथ्य में कोई विशेष कारण है कि यीशु को खड़ा हुआ चित्रित किया गया है। [36]यह मसीह से सम्बन्धित शब्दावली है (दानिय्येल 7:13, 14) जिसका प्रयोग यीशु ने कई बार अपने लिए किया था। [37]बेशक, न तो यीशु और न ही स्तिफनुस परमेश्वर की निन्दा के दोषी थे क्योंकि उन्होंने सच बोला था। [38]''अन्तिम तिनका'' मुहावरा है जो संकेत देता है ''[अन्तिम] तिनका जिसने [अन्त में] ऊंट की कमर तोड़ दी [जो तिनकों के बोझ से पहले ही दबी पड़ी थी]।'' [39]अन्य देशों में रहने वाले अपने देश के उच्चतम न्यायालय के नाम से इसे बदल सकते हैं। [40]विद्वान इस समस्या से जूझते हैं कि ''सभा इससे कैसे बची'' क्योंकि रोमियों ने मृत्यु दण्ड देने का अधिकार (मन्दिर को अपवित्र करने को छोड़कर) सभा से ले लिया था। (1) हो सकता है कि वे ''इससे बचे'' न हों; लेकिन लूका हमें रोम की प्रतिक्रिया नहीं बताता। (2) इसमें मन्दिर आने के कारण हो सकता है कि उन्होंने रोमी अधिकारियों को मना लिया हो कि स्तिफनुस ने ''मन्दिर को अपवित्र'' किया *था*। (3) हो सकता है कि जो कुछ हुआ, उसकी पुष्टि करने में रोमी अधिकारी नाकाम थे (रोमी राज्यपाल त्यौहार के दिनों को छोड़कर बाकी समय कैसरिया में ही रहता था)। (4) हो सकता है कि रोमी अधिकारी इस घटना को जानते हों परन्तु उन्होंने इसे दूसरे नज़रिये से देखने का निर्णय लिया हो। पवित्र आत्मा ने यह जरूरी नहीं समझा कि हमें उसका पता होना चाहिए।

[41]हमारे पास किसी तर्कसंगत चर्चा, वोट, या अध्ययन किए गए निर्णय का संकेत नहीं है। यह उग्र भीड़ का काम था। [42]यह शास्त्र से बाहर की यह यहूदी परम्परा बाद में तालमुड में संकेत में लिखी गई जिसे ''व्यवस्था की यहूदियों की व्याख्याएं'' कहा जा सकता है। [43]''जवान'' से केवल यह संकेत मिलता है कि शाऊल चालीस वर्ष की आयु से कम का था। वह इस समय सम्भवत: तीस और चालीस के बीच की आयु का था। [44]इस पर काफ़ी बहस हो चुकी है कि शाऊल सभा का सदस्य था या नहीं। इस भाग में शाऊल के मनपरिवर्तन पर प्रवचन की चर्चा देखिए। [45]''पांवों के पास'' अक्सर अधीनता का संकेत मिलता है (4:35, 37; 5:2 पर नोट्स देखिए) और शाऊल मसीहियों के विरुद्ध आरम्भ हुए उस सताव को उकसाने वाला था जो ''उस दिन'' से आरम्भ हुआ जब स्तिफनुस मारा गया (8:1), इसलिए शाऊल उसकी हत्या के लिए ज़िम्मेदार हो सकता है। शाऊल ने कभी भी यह दावा नहीं किया कि जब मसीही मारे जा रहे थे तो वह केवल वहां खड़ा देख ही रहा हो (26:10)। [46]बाद की पीढ़ियों में विस्तृत निर्देश दिए गए कि पथराव कैसे होना चाहिए। यह ज्ञात नहीं है कि जब स्तिफनुस को पत्थरवाह किया जा रहा था, उस समय मापदण्ड ये लागू थे या नहीं। यह तथ्य कि स्तिफनुस झुक सका था (आयत 60), मुझे यह विश्वास दिलाता है कि उसको पत्थर मारना औपचारिक नहीं था। [47]यह उन कुछ समयों में से एक है जहां वचन में प्रार्थना यीशु को सम्बोधित करके की गई हो। यह दिखाता है कि यीशु को सम्बोधित प्रार्थनाएं गलत नहीं हैं (कई गीत जिन्हें हम गाते हैं, वे सीधे यीशु को सम्बोधित करते हैं), परन्तु यीशु से सीधे प्रार्थना करने के बहुत कम उदाहरण हैं, ये प्रार्थनाएं नियम न होकर *अपवाद* ही मानी जानी चाहिए। नियम यह है कि प्रार्थना यीशु *के द्वारा* परमेश्वर से हो (1 तीमुथियुस 2:5; यूहन्ना 16:23, 24)। [48]मूल शास्त्र में अक्षरश: है ''(अपने) घुटने टेक कर,'' जो जानबूझ कर किए काम की ओर संकेत है। ''घुटने टेक कर'' का यह अर्थ होगा कि स्तिफनुस अभी तक खड़ा ही था और अब वह झुक गया था। तथापि, हो सकता है कि वह भूमि पर पड़ा हुआ हो और घुटनों के बल झुक गया हो। कुछ भी हो, उसने अपने सताने वालों के लिए झुक कर प्रार्थना करने का ही मन बनाया था। [49]यीशु ने मृत्यु को नींद कहा (यूहन्ना 11:11) और नये नियम के लेखकों ने इस वाक्य-रचना को अपना लिया (1 थिस्सलुनीकियों 4:13)। यह शरीर की बात है, न कि आत्मा की; यह ज़ोर देता है कि मृत्यु अन्त नहीं है, क्योंकि शारीरिक पुनरुत्थान होगा (1 कुरिन्थियों 15)। कब्रिस्तान के लिए अंग्रेज़ी के शब्द ''cemetery'' का अक्षरश: अर्थ ''नींद का स्थान'' है। [50]स्तिफनुस की प्रार्थना

पुराने नियम के एक संदेशवाहक की प्रार्थना के विपरीत है जिसे अपने विश्वास के कारण पत्थर मार-मार कर मार डाला गया था। उस संदेशवाहक ने प्रार्थना की थी ''यहोवा इस पर दृष्टि करके इसका लेखा ले!'' (2 इतिहास 24:22)।

[51]इस कथन को बहुत से लेखकों ने उद्धृत किया है। निस्संदेह हम शाऊल पर स्तिफनुस की मृत्यु के सम्पूर्ण प्रभाव को कभी नहीं जान पाएंगे परन्तु यीशु ने बाद में कहा कि शाऊल के लिए ''पैने पर लात मारना'' कठिन था (26:14), जो यह संकेत देता है कि यीशु कई बातों को ''पैने'' बनाकर इस्तेमाल कर रहा था और उसके लिए उनकी उपेक्षा करना पीड़ादायक था। स्तिफनुस की पीड़ादायक याद भी उन में से एक होगी। यह तथ्य कि लूका ने ज़ोर दिया कि शाऊल वहां उपस्थित था, सुझाव देता है कि ऐसा ही था। [52]''उजाड़ रहा'' (8:3) पर नोट्स देखिए।

Peter's Journey
(Ax. 9:32-10:48)

पतरस की यात्रा
(प्रेरितों 9:32-10:48)

Philip's Second Journey

फिलिप्पुस की दूसरी यात्रा

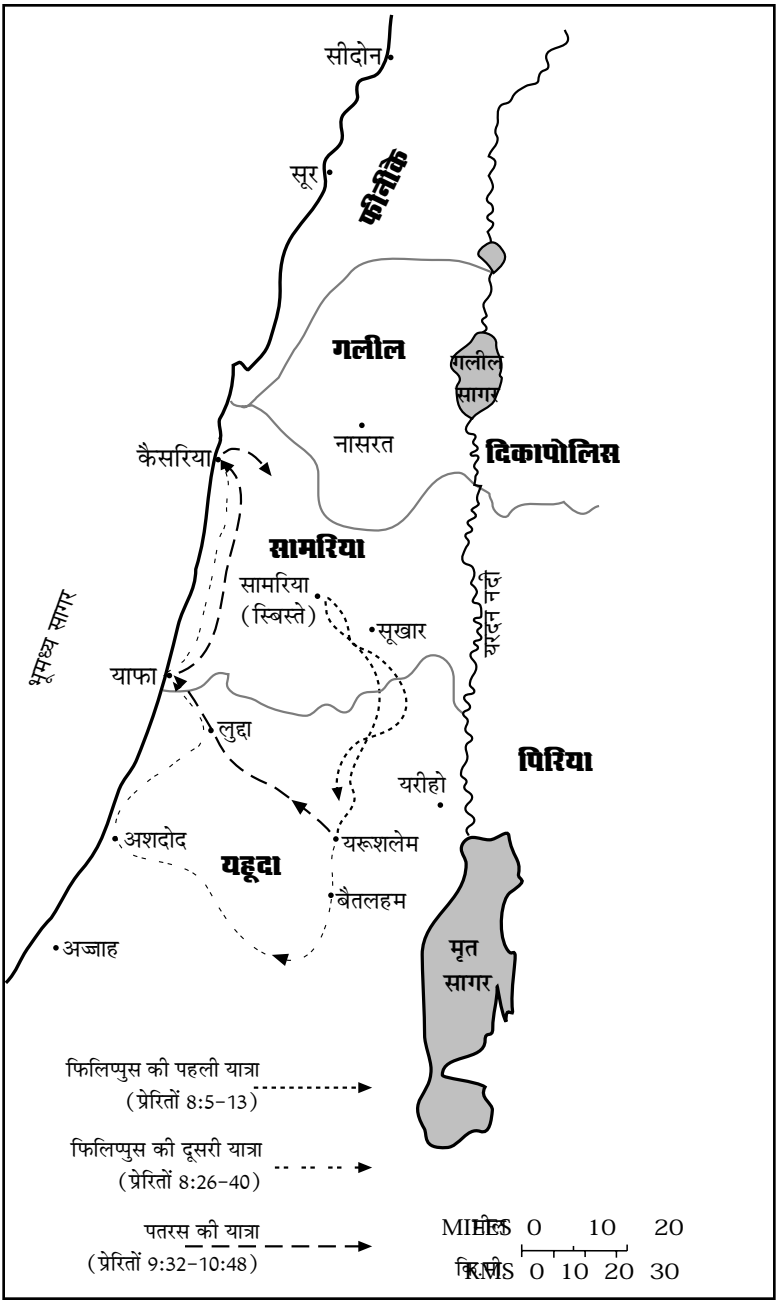

फिलिप्पुस और पतरस की यात्राएं